अजायब बानी

मासिक पत्रिका जून-2025

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–तेइसवां	अंक–दूसरा	जून–2025

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

जीवन की पड़ताल 3

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

पवित्र यात्रा 25

सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

धन्य–अजायब 32

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला –श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **तुलसीदास छाबड़ा**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 279 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Raj.)

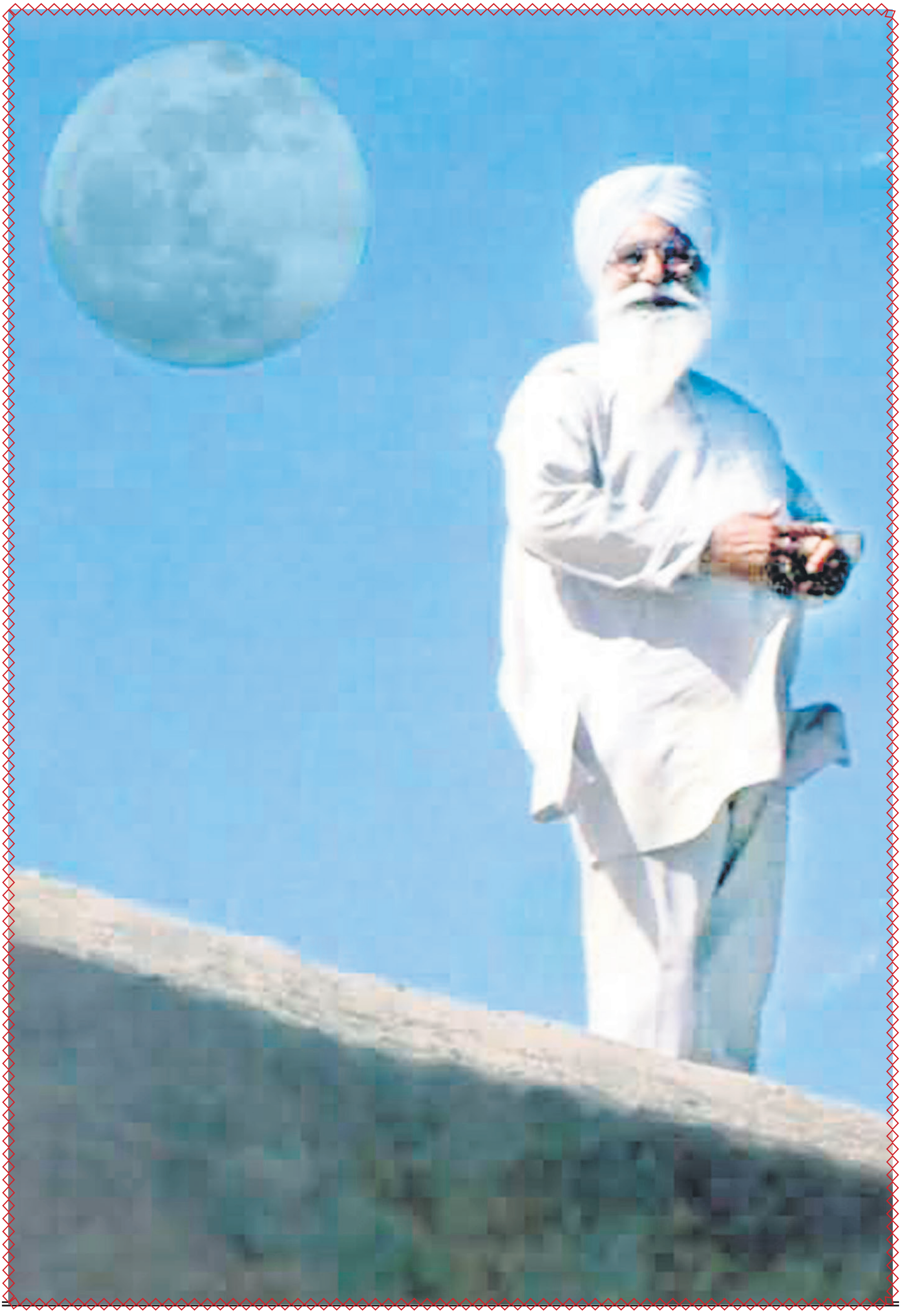

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

जीवन की पड़ताल

01 जनवरी 1993 — सहजो बाई जी की बानी — 16 पी.एस. राजस्थान

परमात्मा सावन–कृपाल के नाम में सबको नये साल की बहुत–बहुत शुभकामनाएं, इंसान की जिंदगी में नया साल नई शुरुआत होती है। हमें यह लेखा–जोखा करना चाहिए कि इस साल में मैंने कितना भजन–सिमरन किया, कितने ख्याल पवित्र बनाए, कितना मन पवित्र बनाया और खुद कितना पवित्र बना। सतसंगी को हमेशा ही अपने **जीवन की पड़ताल** करते रहना चाहिए।

हर सन्त–महात्मा ने संसार में अपने सेवकों को कोई न कोई तरीका बताया है। गुरु रामदास जी, गुरु गोबिंद सिंह जी और गुरु नानकदेव जी ने भी अपने सेवकों को **जीवन की पड़ताल** के बारे में बहुत कुछ बताया है। बहुत सारे गुरु साहिबानों के वक्त सेवक संगत में खड़ा होकर बता देता था कि मैंने कितनी तरक्की की है, कितने ऐब किए हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने सेवकों से कहा कि जब आपसे पाप हो जाता है तो आप एक तरफ एक कंकर उठाकर रख दें फिर उन कंकरों की गिनती करें। उनके कहने का भाव कि जब हम गिनेंगे तो हमें शर्म महसूस होगी।

करतूत पशु की मानस जात, लोक विचारा करे दिन रात।

बाहर से हम इंसान कहलवाते हैं और देखने में भी इंसान लगते हैं अगर हमारी ऐसी करतूत है तो हमें अपने ऊपर शर्म जरूर आएगी। परमात्मा कृपाल ने हमें डायरी रखने के लिए कहा, आप उसे डायरी, रोजनामचा या नित **जीवन की पड़ताल** कह लें। हमारे हिन्दुस्तान में पढ़े–लिखे लोग कम हैं। हमारे देखने की बात है कि महाराज जी ने कई औरतों को नामदान के वक्त डायरियां दी। उन्होंने उस डायरी को घर ले जाकर ऊँची जगह

पर रख दिया और रोज घी की जोत जलानी शुरू कर दी। जब महाराज जी आए तो उन्होंने पूछा क्यों भई, डायरी रखती हो, **जीवन की पड़ताल** करती हो? एक बुजुर्ग औरत ने कहा कि डायरी ऊँची जगह पर रखकर घी की जोत जलाते हैं और कभी उस डायरी को जूठा हाथ भी नहीं लगाया।

सन्त **जीवन की पड़ताल** के लिए डायरी देते हैं, घी की जोत जलाने के लिए नहीं देते। हमने देखना है कि आज सारे दिन में कितना भजन-अभ्यास किया, कितनी किसी की निन्दा-चुगली की, कितना किसी का जुबान से बुरा किया, कितना अंदर ही सोचकर किसी का बुरा किया और पैसे से किसी का कितना भला-बुरा किया। जब हम शाम को सोते समय ये सब कुछ डायरी में लिख देते हैं तो मन को कुछ तो धिक्कार लगती है।

पश्चिम के लोग डायरी की बहुत कद्र करते हैं। मैं जब टूर पर जाता हूँ तो देखता हूँ कि वे लोग रात को सोते समय डायरी भरते हैं कि आज मैंने दिन में क्या कुछ किया है। उसके अंदर यह भी दर्ज होता है कि मैंने कहाँ तक तरक्की की है, मैं अंदर क्या देख रहा हूँ, और क्या शब्द सुन रहा हूँ।

मैं आपको फिर नए साल की ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूँ। इसमें हम सतसंगियों को अपने **जीवन की पड़ताल** जरूर करनी चाहिए क्योंकि दुनियावी तरक्कियां हमारे साथ नहीं जाएंगी। अहंकार ही हमारे पल्ले पड़ता है कि हमने इतनी तरक्की कर ली है, हम इतने धनवान हो गए हैं, हमारे इतने पुत्र या पौत्र हैं। प्यारेयो, यह इस दुनिया का मसाला है, इसने यहीं रह जाना है। तरक्की करने वाली और सोचने वाली चीज सिर्फ भजन-सिमरन है। गुरु साहब कहते हैंः

तोसा बंधहु जीअ का ऐथै ओथै नाल।।

नाम की कमाई ने हमें यहाँ भी शान्ति देनी है और आगे मालिक के दरबार में भी जगह देनी है, हमने उसी में समाना है। अब आप गौर से सहजो बाई की बानी सुनेंः

गुरुमग दृढ़पग राखिये, डिगमग डिगमग छांड़।
सहजो टेक टरै नहीं, शूर सती जो मांड।।

अगर हम मकान बनाते हैं तो सबसे पहले हम उसके बारे में बहुत सोच-विचार करते हैं कि मकान कैसा होना चाहिए, कितना खर्च होगा, कौन सा मिस्त्री काबिल है, जो हमारा खर्च भी कम करे और मकान भी अच्छा बनाए। लड़की की शादी करनी है तब भी हम प्लानिंग करते हैं कि लड़का अच्छा हो, कितना खर्च होगा, कितनी बारात आएगी और उनका इंतजाम क्या होगा। अगर हम बीमार हो जाते हैं तो सबसे पहले सोच-विचार करते हैं कि किस डॉक्टर के पास जाएं, कौन सा डॉक्टर काबिल है। कहीं हम ऐसे अस्पताल में न चले जाएं जहाँ का खर्च हम बर्दाश्त ही न कर सकें तो हमें सारी ही प्लानिंग बनानी पड़ती है।

इसी तरह सारी दुनिया हवा, मिट्टी, पानी, आकाश और अग्नि पाँच तत्व की बनी हुई है। किसी में एक तत्व है, किसी में दो तत्व हैं और किसी में तीन तत्व हैं। चौपाए जानवरों में चार तत्व हैं, इनमें बुद्धि नहीं इन्हें इतनी समझ नहीं होती कि कौन सा काम अच्छा है और कौन सा काम बुरा है। इन्हें ये भी पता नहीं कि हमारा मालिक हमारे साथ कितना प्यार करता है। हम कई बार देखते हैं कि जमींदार लोग जानवर रखते हैं, वे जिस जानवर को रखते हैं वही जानवर उन्हें मारता है।

इंसान भी प्लानिंग बनाते हैं। सारे लोग ऐसे नहीं कि माँ के पेट से निकले, खा लिया और सो गए। इंसान इंसान में बड़ा फर्क है। परमात्मा संसार में जो अच्छी आत्माएं भेजते हैं, वे सोचते हैं कि हम कहाँ से आए हैं, क्यों आए हैं और हमारा अन्त क्या है?

मैं अपने बचपन की अवस्था बताया करता हूँ कि हम माता के साथ बाहर जाया करते थे। रास्ते में एक बूढ़ा बैठा होता था जो बिल्कुल भी चल नहीं सकता था, घर के लोग छड़ी पकड़कर उसे दरवाजे से बाहर बिठा

देते थे। इस तरह उसके पास से साल–डेढ़ साल तक गुजरते रहे, एक दिन वह दिखाई नहीं दिया। मैंने सहज स्वभाव अपनी माता से सवाल किया कि वह बूढ़ा कहां गया? हम जब भी वहाँ से गुजरते तो बच्चों की आदत के अनुसार उस बूढ़े को कंकर मारते या उसका पल्ला पकड़कर खींचते।

माता ने कहा कि पहले वह जीवित था यहां बैठा रहता था, अब वह मर गया है। इस बात ने मेरे दिल में काफी हलचल पैदा की कि इंसान मरने के बाद संसार में नहीं आता। वह किसी से नहीं मिलता, यार–दोस्तों के पास फिर नहीं आता। माता ने जवाब दिया कि बेटा, कोई ऐसी शक्ति है जो बोलती है, हरकत करती है लेकिन मुझे उस शक्ति का ज्ञान नहीं। मुझे उस वक्त से इस चीज की तलाश हुई कि किस तरह यह मसला हल हो, हमें कैसे पता चले कि हम कहाँ से आए हैं, किसलिए आए हैं और आखिर हमने कहाँ जाना है? अगर इंसान के दिमाग में ये तीन चीजें आ जाएं कि परमात्मा ने हमें किस मकसद के लिए जन्म दिया है तो हम उसे सफल बना लें।

जब हम थोड़े से बड़े होते हैं तो हमारा ध्यान ग्रंथ–पोथियों के अध्ययन की तरफ चला जाता है, मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारों की तरफ चला जाता है। वहाँ सब यह कहते हैं कि परमात्मा हैं, परमात्मा का कोई नाम भी है। चाहे किसी पत्थर की मूर्ति को मानते हैं या किसी ग्रंथ को मानते हैं, वे भी ये कहते हैं कि गुरु के बिना ज्ञान नहीं क्योंकि उसी को वे गुरु पीर सब कुछ समझते हैं।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है, जरूर मिलता है।'' अगर हमारे अंदर जबरदस्त चाह है तो वे हमारे मिलने के लिए जरूर उपाय करते हैं अगर बच्चा अपनी माता के लिए रोता है तो माता भी रह नहीं सकती। वह बच्चे का उठाकर छाती से लगाती है और उसकी जरूरत पूरी करती है।

ममता से बंधी हुई दुनियावी माता बच्चे के लिए इतना कुछ करती है, हम जिस परमात्मा की अंश हैं अगर उन्हें सच्चे दिल से याद करेंगे तो वे कैसे रहेंगे? अब सवाल पैदा होता है कि हमने परमात्मा को देखा नहीं होता। भाई, मुल्ला, पंडित, पादरी सब यही कहते हैं कि वह अकाल है, उसका कोई रूप-रंग, रेख-भेख नहीं लेकिन इससे आगे उन्हें कुछ भी पता नहीं। वे जिस चीज को मानते हैं उस तरफ हाथ कर देते हैं कि यही सब कुछ हैं लेकिन जो पुरुष परमात्मा की तरफ से आए हैं, जिन्हें परमात्मा की खोज है उनकी तसल्ली नहीं होती। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

बरन आस्रम सासत्र सुनउ दरसन की पिआस।।
ओहु सरूपु संतन कहह विरिले जोगीसुर।।

सब कुछ सुना तो तड़प और बढ़ गई और गुरु रामदास जी के साथ मिलाप हो गया। हम कहेंगे कि अर्जुनदेव तो उनके घर में ही पैदा हुए थे। प्यारेयो, पृथ्वीचंद भी तो उनके घर में ही पैदा हुए थे। जिनके ऊँचे भाग्य हों सन्त उन्हें ही अपनी पहचान देते हैं। जिसका कोई रेख-भेख नहीं उसे हम निराकार कहकर बयान करते हैं, सन्त वह स्वरूप लेकर आते हैं, परमात्मा उन्हें भेजता ही इसलिए हैः

अकाल मूरति है साध संतन की ठाहर नीकी धिआन कउ।।

सन्त काल के दायरे से ऊपर होते हैं। परमात्मा हमेशा ही अपने प्यारे बच्चों को संसार में भेजते हैं। वे देखने में हमारे जैसे ही इंसान होते हैं, हमारी तरह ही बोलते-चालते हैं और सारी क्रियाएं करते हैं लेकिन वे दुनिया में रहते हुए दुनिया की मैलों में गंदे नहीं होते, दुनिया की असलियत को समझकर दुनिया में रहते हैं। जिस तरह जब हम तस्वीर का अगला हिस्सा देखते हैं तो वह बड़ी ही खूबसूरत लगती है उस तस्वीर की तरफ दिल मोहित हो जाता है कि किसी ने बड़ी अच्छी तस्वीर खींची है। जब हम उसका पिछला हिस्सा देखते हैं तो उसमें गत्ता और कीलें हैं। इसी तरह जब हम दुनिया को शराबों-कबाबों में लिप्त देखते हैं तो हम सोचते हैंः

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।

दुनिया बहुत सुखी है, जब इसे यहां से जाते हुए देखते हैं तो यह रोती–चिल्लाती हुई चली जाती है। श्मशान भूमि में रिश्तेदार अपने बिछड़े सगे–संबधियों को देखकर चीखकर रोते हैं, अस्पतालों में मरीज चीखें मारते हैं। उस समय दिल में आता है कि ये क्या लेकर गया लेकिन फिर मन भुला देता है कि शायद मैं कुछ न कुछ ले जाऊंगा। कबीर साहब कहते हैं, ''इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है, हाथ पसारकर चला जाता है।''

सन्त इस संसार का बैकग्रांउड देखते हैं क्योंकि इस संसार में न कोई गरीब सुखी है और न कोई अमीर सुखी है। महात्मा को जिंदगी में एक गरीब से लेकर बड़े–बड़े राजा–महाराजाओं तक मिलने का मौका मिलता रहता है। जिससे भी पूछते हैं वह फोड़े की तरह भरा हुआ है। आज हम जिसे थोड़ा बहुत सुखी समझते हैं क्या पता है कि कब आफत बन जानी है, कब एक्सीडेंट हो जाना है, कब हार्ट फेल हो जाना है, कब किस बीमारी ने आकर घेर लेना है।

सन्त उस निराकार रूप से मिलवाते हैं तभी हम सन्तों की संगत में जाते हैं फिर हम यह कह देते हैं कि हम खुद ही सतसंग में जाते हैं, ऐसा हम उतने दिन ही कहते हैं जितने दिन हमारी आँखें नहीं खुली।

प्यारेयो, अंधे में ताकत नहीं कि सुजाखे को पकड़ ले। ये आँखें परमात्मा ने केवल उन महात्माओं को दी होती है कि कौन मेरे मिलाप के लिए तड़प रहा है, यह इंतजाम गुरु का ही होता है। किसी ने क्राईस्ट से पूछा, ''आप पहाड़ों में मारे–मारे क्यों फिरते हैं?'' क्राईस्ट ने कहा, ''मेरी भेड़े गुम हो गई हैं, उन्हें ढूंढ रहा हूँ।'' आत्मा को भेड़ कहकर बयान किया है। पलटू साहब कहते हैं:

उनको क्या है चाह सहत हैं दुःख घनेरा।
जिव तारन के हेतु मुलुक फिरते बहुतेरा।।

सन्त दुनिया में मान–बड़ाई या धन–दौलत इकट्ठा करने के लिए नहीं आते, वे नमूने का जीवन व्यतीत करते हैं। सेवक की कमाई को पवित्र करने के लिए साध–संगत में लगा देते हैं इसलिए उन्होंने लंगर चलाया होता है। लंगर में कोई रोटी पकाता है कोई लंगर में से खा लेता है कोई लंगर में सेवा डाल देता है। महाराज सावन सिंह जी कहते हैं, ''अमीर लोग लंगर में सेवा डाल देते हैं और गरीब लोग खा लेते हैं।'' ये भी संगत के फायदे के लिए होता है, उसमें सन्त खुद भी अपनी कमाई डालते हैंः

घालखिाइ कछ्रि हथहु देइ, नानक राहु पछाणहिसेइ।।

जो अपनी मेहनत की कमाई से लंगर में डालता है मालिक उसके लिए दरवाजा खोलते हैं। जो भी परम सन्त संसार में आए हैं, उनका जीवन उदाहरण होता है। जब हमें पूर्ण महात्मा मिल जाते हैं तो नाम लेने से पहले हम जो मर्जी खोज कर लें, वह बुरी नहीं होती। कोई दो पैसों की हांडी भी लेता है तो उसे भी खड़काकर देख लेता है लेकिन जब हम नाम ले लेते हैं तो फिर हमें डिगमिग नहीं होना चाहिए कि कभी खड़ा हो गया, कभी गिर गया तो हम किस तरह कामयाब होंगे। अगर हम कहते हैं कि भजन नहीं बनता, मन नहीं ठहरता उसकी यही गलती है कि हमें अंदर से विश्वास नहीं। कई बार मन अभ्यास में बैठे हुए को उठा लेता है, मन आपका सिमरन छुड़वाकर दुनिया के कारोबार मे लगा देता है।

सहजो बाई कहती हैं कि जब आपने गुरु से नाम ले लिया है तो अंदर जो डगमगाहट की स्थिति बनी हुई है उसे छोड़ दें। बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाया है कि जिस तरह सूरमा मैदान में जाता है अगर वह भाग जाए तो उसका अपयश होता है, लोग उसे सूरमा नहीं कहते। सूरमे का काम मैदान–ए–जंग में मर जाना या मार देना है। यह उसे पहले ही पता है कि मैंने जिसके सामने होना है, मैंने उसे तलवार मारनी है, उसने मुझे तलवार मारनी है लेकिन सूरमे को चाव चढ़ता है, उसे खुशी होती है।

इसी तरह पिछले जमाने में सती होती थी। सती उसे नहीं कहा गया जो मड़ियो में जलती हैं यह लोक दिखावा है। गुरु साहब कहते हैं:

सतीआ एहनि आखीअनजिो मड़आि लगजिलंनी।
नानक सतीआ जाणीअन् जिबरिहे चोट मरंन्ी।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जिंदगी में शादी एक के साथ ही होती है। पति पास हो या न हो यह कानून औरत और मर्द दोनों पर ही लागू होता है।'' जब उस मैदान में आ गए हैं तो उन्हें भी अपना धर्म पालना पड़ता है। यह भी बहुत बड़ा यत और सत है। गुरुमत में वही सिख है जिसका एक गुरु पर ही भरोसा है।

सेवक को पता है कि ये सुख–दुख मेरे अपने ही कर्मों का है हाँलाकि सतसंगी को पूरे कर्म का भुगतान नहीं करवाया जाता और न ही यह बेचारा पूरा कर्म भोग सकता है अगर एक मण में से किलो–दो किलो वजन सेवक पर आ जाए तो वह भजन छोड़ जाता है और विनतियां करनी शुरु कर देता है। ये अरदास और विनतियां हमसे हमारा मन करवाता है। मन कहता है कि मैंने गुरु के कहने पर नहीं चलना, गुरु मेरे कहने पर चले। अब आप ही बताएं कि वह सेवक कैसे पास होगा और उसका कैसे फायदा होगा?

सन्तों ने संसार में आकर आज तक बहुत सख्त से सख्त भाणें माने। सेवक के आगे एक नमूने का जीवन रखा। आप भी उस मालिक में नुख्स न निकालें कि उसने ऐसा क्यों किया तभी आप कामयाब होंगे। गुरु परमात्मा का भाणा मानता है और सेवक गुरु का भाणा मानता है। सहजो बाई कहती हैं कि आपने नाम ले लिया है अब आप सूरमें बन जाएं, सती जैसा दिल बना लें। सूरमें डोलते नहीं। हमारी लड़ाई हमारे मन के साथ है, हमारा दुश्मन मन हमारे अंदर है। तुलसी साहब कहते हैं:

तुलसी रण में जूझना, घड़ी एक का काम।
नित उठ मन से जूझना, बिन खंडे संग्राम।।

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

अंदर रोज मन के साथ लड़ाई है, बाहर तो खंडा है। अंदर सतगुरु इसे 'शब्द धुन' के साथ लेस करते हैं अगर सेवक इस लड़ाई में गुरु का आसरा लेकर चलता है तो वह खुद देख लेता है कि मेरी पीठ पर मेरे गुरु खड़े हैं। कोई एक कदम चलकर देखे। गुरु साहब कहते हैंः

निहिते पंजजिुआन मै गुर थापी दिती कंडजीउ।।

आप दोनों आँखों के दरमियान आकर देखें। आपका गुरु आपको हिम्मत देकर इनके सामने खड़ा करता है। हम बाहर के दीन के लिए लड़ते हैं, अंदर का पता ही नहीं। कबीर साहब कहते हैं, ''जो बाहर खंडे –तलवारों के साथ लड़ते हैं वे सूरमें नहीं, सच्चे सूरमें वे हैं जो शब्द का हथियार लेकर लड़ते हैं।''

गुरु के प्रेमपंथ शिर कीजे। आगा पीछा कबहुँ न दीजे।।
गुरु के पंथ होइ सो होई। मारग आन चलो मत कोई।।

अब सहजो बाई कहती हैं कि जब नाम ले लिया गुरु ने हमें रास्ता बता दिया कि तेरा रास्ता तेरे शरीर के अंदर है, अब तू उस रास्ते पर चल। गुरु उस रास्ते पर शिष्य के कर्मों के मुताबिक नाम के दीपक का प्रकाश कर देते हैं और यह भी कहते हैं कि अब इसे बढ़ाना तेरा काम है। वे अंदर शब्द की आवाज भी पैदा कर देते हैं कि तू इस आवाज को पकड़कर रोशनी के जरिए रास्ता तय करता जा। जब तू इस रास्ते पर आ गया है तो अब कुछ भी हो तू इस रास्ते से मत भटक।

प्यारेयो, हमें हर काम में थोड़ा बहुत विश्वास करना पड़ता है। जिस तरह पढ़ते समय हमें ज्योमेट्री की समीकरणें थोड़े समय के लिए कल्पित करनी पड़ती हैं उसके बाद हम माहिर हो जाते हैं तो हमें कुछ कल्पित नहीं लिखना पड़ता क्योंकि सच्चाई सामने आ जाती है। शुरु–शुरु में जब हम अंदर दोनों आँखों के दरमियान नहीं टिकते तो हमें बाहर विश्वास

बनाना पड़ता है कि हमारे गुरु कुलमालिक हैं, शब्द–रूप है। जब हम सिमरन करके दोनों आँखों के दरमियान टिकने लग जाते हैं तो अंदर का मार्ग गुमराह करने वाला नहीं होता क्योंकि गुरु साथ है, वह किताब की तरह खुल जाता है। गुरु साहब कहते हैंः

आगाहा कू त्राघ पछिप फेरनि मुहडड़ा।
नानक सझिड़िवेहा वार बहुड़नि होवी जनमड़ा।।

अगर आगे जाने की इच्छा हो और सेवक लड़ाई लड़ता है तो उसे दोबारा संसार में नहीं आना पड़ता।

गुरु के पंथ पैज का पूरा। गुरु के पंथ चलै सोई शूरा।।

गुरु के रास्ते पर वही चलता है जिसने सच्चे दिल से शरण ली हुई है। जो संसार को दुख रूप समझता है, वही सच्चा सूरमा–बहादुर है। अंदर मन के साथ लड़ना है, मन के हथियार ख्वाहिशें हैं। ख्वाहिश उठती है तो उन्हें पूरा करने के लिए उसी इन्द्री का सहारा लेते हैं। काम की ख्वाहिश उठती है, काम इन्द्री का सहारा लेते हैं। जीभ की ख्वाहिश उठती है फिर हम मीट शराब की तरफ चलते हैं, चस्के लगाने को दिल करता है अगर सारी जिंदगी इसी तरह चलता रहा तो क्या वह गुरुवर्ती कहलवा सकता है?

गुरु ते बेमुख ठौर न पाई।

सन्त कहते हैंः

तिन के मुख जम पल पल थूके।

बताओ भई, आपको निस्वार्थ सेवा करने वाले गुरु मिले, आपने उनका रास्ता छोड़ दिया।

गुरु के पंथ चलै जो योधा। गुरु के पंथ चलै कहा वोधा।
गुरु के पंथ नहीं ठग लागैं। गुरु के पंथ कपट भय भागैं।।

गुरु के रास्ते पर चलने से धर्मराज ने रास्ते में जो ठग बिठाए हैं, वे आपको नहीं लूटेंगे। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर गागर जिल भरी आजु काला् जिहिफूट।।
गुरु जुन चेतह आपनो अध माझ लीजहगि लूट।।

जब आखिरी वक्त आता है तो वे चेतावनी देते हैं कि तूने इनका जो कुछ लेना–देना है, उसे आज की रात ही निपटा ले। वह कहता है कि मैंने कुछ लेना देना नहीं तो यम कहते हैं कि फिर तुझे ये क्यों रोते हैं? रोने वाले तो अपने मतलब के लिए रोते हैं। यम उसे मारते पीटते हैं कि ये क्यों रो रहे हैं, वह उस समय काला पीला होता है। पिछले जमाने में कहते थे कि घोड़ड़ू बजता है, घोड़ड़ू उसे कहते हैं जो गले में खांसी की खरखराहट होती है, बोला नहीं जाता। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

घुँघरू वाजै जे मनु लागै।

अगर उस समय भी गुरु की तरफ ध्यान चला जाता है तो गुरु उस समय भी इसकी रक्षा करते हैं।

मैंने जिंदगी में कई मौतें देखी हैं। जिनके पति या जवान बेटे मरते हैं उसकी जान पर बनी होती है। वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है उससे कहते हैं कि हाय! दुश्मना किसके आसरे छोड़कर जा रहा है? लड़के झकझोरते हैं कि कुछ रखा रखाया है तो बता दे अगर बुजुर्ग ऐसे नहीं मानता तो कहते हैं कि इसे टीका लगवाओ, यह नशे में आ जाएगा। आज के जमाने में वे मरे हुए को भी उठाए फिरते हैं कि अंगूठा लगवाकर वसीयत करवा लें। मैं कोई सुनी–सुनाई बातें नहीं करता, मैं जो कुछ देख रहा हूँ या प्रेमी बताते हैं, मैं वही बातें कर रहा हूँ कि उस समय इस जीव के ऊपर क्या बनी होती है। ये सारी जिंदगी ठगकर और कमाकर जिन्हें खिलाता रहता है वे आखिर में इसकी क्या दुर्दशा करते हैं।

गुरु के पंथ नहीं ठग लागैं। गुरु के पंथ कपट भय भागैं।।

ठग इसे मारते–पीटते हैं, वहाँ यह पानी माँगता है फिर इसे चम्मच से पानी पिलाते हैं, हम देखते तो सब कुछ हैं। उस समय यह कौन सा कुँए पर काम कर रहा होता है जो इसे प्यास लगती है। उस समय तो अंदर इसे मार पड़ती है अगर बोल नहीं सकता तो हाथ से मुँह की तरफ इशारा करता है कि मुँह में पानी डालो, हम चम्मच से मुँह में पानी डालते हैं। यम मारते हैं यह कहता है कि तरस करो, यम कहते हैं कि फलाना पुण्य हमें दे दे। पाप कौन लेता है? अगर हम थाने वालों से कहें कि इस गंद को ले जाएं तो क्या वे ले जाएंगे? वे कहेंगे कि अंदर जो नरमा(कपास) या गेहूँ रखी है, उसे बेचकर हमें दे दे। इसी तरह यम हमारे पाप नहीं लेते।

कबीर साहब कहते हैं कि वहाँ इसके पुण्य लुट जाते हैं। अभी तो धर्मराज के सामने जाकर पेश होना है, उसने फैसला सुनाना है। इसके कर्म करतूत के मुताबिक जामा घड़ा होता है।

जब गुरु नानकदेव जी मक्का गए तो काजी रुकनदीन ने उनसे पूछा, ''आप गुरु की बहुत महिमा करते हैं, गुरु कहाँ काम आते हैं?'' गुरु साहब ने कहा, ''आपकी पवित्र किताब में भी लिखा है कि आगे दोजख की नदी आती है। हिन्दू शास्त्रों में इसे बेतरणी नदी लिखा है कि यह बड़ी गलीच नदी है जिसमें गंद ही गंद बह रहा है। उसमें मलीन आत्माओं को गोते देते हैं, वह सिर तक डूबा रहता है जब सिर बाहर निकालता है तो यम इसे जूते मारते हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बे पीरा बे मुर्शिदा कोई न पुच्छे बात।

वहाँ उसे कौन पूछेगा अगर उसका कोई गुरु पीर है तो वह आगे खड़ा होगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सजण सेई नाल मै चलदआि नाल चलंन्।।
जथै लेखा मंगीऐ तथै खड़े दसिंन ।।

पूरे गुरु किसी खास किस्म के कपड़े नहीं पहनते। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि आप किसी सतसंगी का अंत समय देखें! वह सब कुछ बताकर जाएगा लेकिन शर्त यह है कि आप बेसतसंगी को एक तरफ कर दें अगर नजदीक में बेसतसंगी बैठे हैं तो वह वैसे ही चला जाएगा। हमारे सतसंगी अनेकों ही घटनाएं बताते हैं कि जिन्होंने नाम नहीं लिया लेकिन उनके घर में एक सतसंगी है, वह गुरु की तारीफ करता है और उस घर के लोग गुरु की तारीफ को सुनते हैं तो गुरु उनकी भी संभाल करते हैं। गुरु सेवक के पशु–पक्षी की भी संभाल करते हैं क्योंकि ये उनका बिरद(यश) है। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर बैसनउ की कूकर भली साकत की बुरी माइ।।
ओह नति सुनै हर नाम जसु उह पापा बसिाहन जाइ।।

साकत की माँ भी बुरी है क्योंकि वह अपने लड़के को पाप और चोरी करना ही सिखाएगी। साधु की कुतिया अच्छी है, वह कानों से कथा तो सुनती है इसलिए उसकी संभाल होती है। गुरु साहब कहते हैंः

बीज मंतरु सरब को गआिनु।।

गुरु के पंथ मुक्ति उजियारा। गुरु के पंथ नहीं संसारा।।
गुरु के पंथ मिटै दुखदोई। गुरु के पंथ महासुख होई।।
चरणदास को पंथ दुहेला। गुरुमुख चालै ताहि सुहेला।।
गुरु के पंथ चलै सतिवादी। सहजो पावे भेद अनादी।।

आप कहती हैं कि आदि और अंत का भेद गुरु के रास्ते पर चलने वाले को प्राप्त हो जाता है वहाँ अंधियारा नहीं बल्कि प्रकाश और आवाज है। वह जीवन मुक्त है।

मैं भाई सुंदरदास के बारे में बताया करता हूँ कि वह महाराज सावन सिंह जी का अच्छी कमाई वाला नामलेवा था, मेरी उसके साथ सात–आठ

घंटे की बैठक थी। किसी आदमी ने उससे कहा, ''सुंदरदास, तू साईकिल चलाना सीख ले।'' वह पुराने ख्यालों का आदमी था, उसने कहा, ''अगर कोई साईकिल चलाकर जाता है तो मेरा मन करता है कि मैं उसे डंडे से मारूं क्योंकि रब ने टाँगे चलने के लिए दी हैं या साईकिल चलाने के लिए दी है?'' उस आदमी ने फिर कहा, ''तू धर्मराज से क्या कहेगा कि मैंने कभी साईकिल नहीं चलाया।'' सुंदरदास ने कहा, ''मेरा धर्मराज के पास क्या काम? मेरा वास्ता मेरे गुरु बाबा सावन सिंह जी के साथ है। मैं डंके से कहता हूँ कि मैंने धर्मराज के पास नहीं जाना, मैंने ज्यादा देर बीमार होकर संसार नहीं छोड़ना।''

यह एक सच्चाई है कि सुंदरदास ने जाने से एक महीना पहले कहा कि किसी को मेरा मृत्यूभोज खिलाना है तो खिला दें। मेरा उसके साथ बहुत प्यार था, हमने उसके जीते-जी मृत्यूभोज किया। उसने अंत समय आने से पहले ही अपना कफन बनवा लिया था। यह वाक्या मेरे पिछले गाँव का है, 77 आर. बी के काफी प्रेमी वहाँ आए हुए थे।

मैंने उन प्रेमियों से कहा कि आपको चाय-पानी बाद में पूछेंगे, पहले प्रसाद करते हैं। जब प्रसाद कर रहे थे तो मैं सुंदरदास के पास गया उसकी बड़ी बहन बहुत दुखी थी, उसके लड़कों ने उसे घर से निकाल दिया था, वह छड़ी के सहारे चलती थी। सुंदरदास के दिल में दया आई और उसने मुझसे कहा, ''महाराज सावन का दरबार खुला है अगर मेरी बहन को भी जगह दी जाए।'' मैंने हँसकर कहा, ''इससे पूछ, क्या यह तैयार है?'' पहले तो वह बहुत मुश्किल से उठकर चलती थी लेकिन यह बात सुनकर वह बहुत जल्दी से बाहर चली गई कि मेरे साथ क्या होने लगा है।

इतनी देर में सुंदरदास चोला छोड़ गया। उसकी बहन सुंदरदास की चारपाई पकड़कर रोकर कहने लगी, ''भाई, धर्म पहचान मुझे साथ ले चल।'' मुझे बहुत गुस्सा आया, मैंने उसकी बाँह पकड़कर उसे दूर किया

कि अब तू लोकलाज दिखा रही है। वह तो तुझे अपने साथ ले जाना चाहता था। कितने आदमी जाने के लिए तैयार हैं? भजन-बंदगी सुंदरदास ने की, महाराज सावन सिंह जी ले जाने वाले लेकिन वह मुफ्त में भी जाने के लिए तैयार नहीं हुई। सहजो बाई कहती हैं कि गुरु के रास्ते में अंधियारा नहीं, वह उजागर है, सदा ही सुहेला है, वह महा आनन्द का रास्ता है।

अड़सठ तीरथ गुरु चरण, परवीहोत अखंड।
सहजो ऐसो धामना, सकल अंड ब्रह्मंड।।
सब तीरथ गुरु के चरन, नित ही परवी होय।
सहजो चरणोदक लिये, पाप रहत नहिं कोय।।

आमतौर पर हम लोग सरोवर या दरिया में नहाने में ही मुक्ति समझते हैं लेकिन सन्त हमें बताते हैं कि सच्चा तीर्थ जिसमें नहाकर आपकी जन्म-जन्मांतर की मैल उतरेगी, वह आपकी काया के अंदर है जिसे गुरु नानकदेव जी ने अमृतसर या दसवां द्वार कहकर बयान किया है। मुसलमानों ने हौज-ए-कौसर या आब-ए-हयात कहकर बयान किया है। क्राईस्ट ने उसे जिंदगी का पानी कहा कि जिंदगी बक्शने वाला पानी आपके अंदर है।

सन्त-महात्मा हमारे ख्याल को बाहर से हटाकर हमें हमारी काया के अंदर जाने की युक्ति बताते हैं कि सच्चा सरोवर आपके अंदर है। सहजो बाई जी कहती हैं कि सच्चाई तो यह है कि आप गुरु के चरणों में पहुँचे जहाँ रोज देवी-देवता भी स्नान करने के लिए तरसते हैं। बाहर भी हम गुरु चरणों को नमस्कार करते हैं लेकिन गुरबानी में जिन चरणों का जिक्र आता है, वह हमारे अंदर हैं। सन्त कहते हैं कि आप फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए दोनों आँखों के दरमियान लाएं। तुलसी साहब कहते हैंः

छिन छिन सुरति सँवार लार दृग के रहौ, तन मन दर्पषन माँन साज खुति से गहौ।।
लगन लगे लख पार सार तब पाइया, अरे हाँ रे तुलसी संत चरन की धूर नूर दर्साइया।।

आप क्षण–क्षण बाहर फैले हुए ख्याल को अंदर ले आएं, इससे आपके तन–मन का शीशा साफ हो जाएगा। सन्तों के चरण न अंड में मिलते हैं न ब्रह्मांड में मिलते हैं। पहले स्थूल पर्दा है, इसके अंदर सूक्ष्म पर्दा है, चाहे आप उसे अंड और ब्रह्मांड कह लें। आप इनसे ऊपर दसवें द्वार में पहुँचे, आपको वहाँ वे चरण मिलेंगे, वहाँ तक देवी–देवताओं की भी पहुँच नहीं है।

पहले गुरु अंगददेव जी देवी के भक्त थे बल्कि जत्थे के मुखिया थे। एक बार उनका मिलाप गुरु नानकदेव जी के एक सतसंगी के साथ हुआ, उसने गुरु की महिमा और गुरु का प्यार बताया। गुरु अंगददेव जी अच्छी पवित्र आत्मा थे, उन्होंने जीवों का उद्धार करना था, गुरु ने उनसे काम लेना था। पवित्र आत्मा कब किसी बात की अनदेखी करती है। अंगददेव जी रोज उस प्रेमी की संगत में जाते और उसकी बात बहुत गौर से सुनते।

एक दिन उस प्रेमी ने अंगददेव जी से कहा कि तुम ज्वाला जी के दर्शनों के लिए जा रहे हो, रास्ते में करतार पुर गाँव आता है, वहाँ गुरु नानकदेव जी खेती–बाड़ी का काम करते हैं, जाते हुए उनके दर्शन कर लेना। अंगददेव जी ने कहा अच्छा भई, एक पंथ दो काज। ज्वाला जी के दर्शन भी करेंगे और जाते हुए गुरु नानकदेव जी से भी मिल लेंगे। यह पता नहीं था कि आँखे चार होते ही वहीं रह जाऊंगा। गुरु नानकदेव जी के दर्शन किए तो मोहित हो गए। सन्त जिसे अपने अंदर का शब्द रूप दिखा देते हैं, वह किधर जाएगा? स्वामी जी ने कहा थाः

मेरे गुरु का दरस कोई देखे, हो जावे हूर परंद री।।

जो अंदर गुरु का स्वरूप देख लेगा वह हूरों पर भी नहीं थूकेगा, यह भी एक मौत–पैदाईश का घर है। अंगददेव जी सुबह उठकर झाड़ू लगाने लगे तो वहाँ एक औरत के वेश में कोई झाड़ू लगा रही थी। भाई लैहणा ने उस औरत से पूछा, ''तू कौन है?'' उस औरत ने कहा, ''तू जिसके दर्शनों के लिए जाता है मैं वही हूँ।'' फिर लैहणा ने पूछा, ''तू यहाँ क्यों

आई है?'' उसने कहा कि लोग मन्नत माँगकर मेरे ऊपर रोज गंद लगा जाते हैं, मैं रोज इनके चरणों में आती हूँ कि कभी मेरे ऊपर भी दृष्टि पड़ जाए या मुझे भी कभी बख्श ही दें।

आप सोचकर देखें, अब वह अपने साथ वालों के साथ कैसे जाए? भाई लैहणा ने अपने साथ वालों से कहा, ''अब आपको मेरी राम-राम है, मैंने जहाँ आना था, मैं आ गया हूँ।'' आगे आपको पता ही है कि उन्होंने गुरु के पास रहकर कितनी सेवा की। यहाँ तक कि उन्होंने गुरु के सहबजादों को भी पीछे छोड़ दिया।

गुरु के चरण ही सच्चा तीर्थ हैं। महात्मा हमारा ख्याल बाहर के तीर्थों से निकालकर अंदर लगाते हैं क्योंकि बाहर का जितना भी पानी है चाहे किसी तालाब का है, नहर या दरिया का है, सारे पानी बदन की मैल उतार सकते हैं आत्मा की नहीं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

काइआ अंदर अंमृत सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे।।

बाहर कोई ऐसा तीर्थ नहीं जहाँ कौए से हंस होते हैं अगर पहले होते तो आज भी हो जाने चाहिए थे। ये तो लोगों ने उस जगह की महिमा बनाने के लिए बाद में कहानियां बनाई होती हैं। कौए से गुरु नानकदेव जी की मुराद मनमुख से है। कौए की खुराक गंद है, मनमुख की खुराक शराब-कबाब और विषय-विकार है। हंस से मुराद सन्त-महात्मा हैं, उनकी खुराक शब्द-नाम का चोगा है।

सब तीरथ गुरु चरणों लारे। चरणामृत दृढ़ सदा हमारे।।
चरण कमल की निसदिन पूजा। परसूँ और देव ना दूजा।
इष्ट हमारे गुरु के चरना। गुरु के चरण ध्यान हूँ धरना।।
गुरु के चरण लगे सो त्यारे। गुरु के चरण प्राण से प्यारे।

सन्त यह नहीं कहते कि हमारे पास पुन्नी ही आएं, वे कहते हैं कि कैसा भी है। धोबी को अपने करतब पर मान होता है कि मैं कपड़े में से सफेदी निकाल लूंगा। सन्तों को पता है कि पापों की मैल के नीचे शुद्ध आत्मा भी है। वे जिसके अंदर अपना नाम रख देते हैं, उसकी जरूर सफाई होती है।

जबहिं नाम हिरदे धरा, भया पापा का नास।
मानो चिनगी आग की, परी पुरानी घास।।

कबीर साहब कहते हैं कि वह देर सवेर एक दिन जरूर महात्मा बनता है। कोई सतसंग में ठोकर खाता है, किसी को ऐसे ही जिंदगी में ठोकरें लगती हैं आखिर इंसान इस तरफ आता है। गुरु को अपने बिरद(यश) की लाज होती है। एक बार नाम ले लें फिर यह न कहे कि मुझसे यह हो गया। मान लिया कि सन्त दया के पुंज होते हैं, उन्हें परमात्मा ने माफी ही माफी दी होती है लेकिन इंसान ने जो पहले किया होता है, उस सब पर मैल चढ़ जाती है फिर उतना समय आपकी मैल की सफाई पर लगेगा।

जैसे धोबी आपके कपड़ों को साफ करता है, आप फिर उन कपड़ों को कीचड़ में लथपथ कर लेते हैं बेशक धोबी जवाब नहीं देता फिर भी उसे उन कपड़ों को धोने में समय लगेगा। गुरु हमारी आत्मा के ऊपर नाम का साबुन लगाते हैं, गुरु धोबी हैं शिष्य कपड़ा है। सुरत–शब्द का नित अभ्यास इसकी सफाई करता है।

आशा मनसा और कर्मना। गुरु के चरण प्रेमचित्त धरना।।
गुरु के चरण होइ सो होना। हानि लाभ के दुख सुख मरना।।
रणजीत गुरु जी चरण तुम्हारे। जीवन प्राण अधार अधारे।।
गुरु के चरण मुक्ति फलदायक। सहजो गुरु के चरण सहायक।।

सहजो बाई ने गुरु की महिमा बहुत दृढ़ता और प्यार से गाई है। महात्मा सुनी–सुनाई बातें नहीं बताते जो कुछ उनके व्यक्तिगत तर्जुबे में

आया है, वे वही बताती हैं। चरनदास इनके गुरु थे, माता पिता ने इनका नाम रणजीता रखा हुआ था लेकिन इनके गुरु ने इनका नाम चरनदास रख दिया। जैसा कि मैंने आपको गुरु अंगददेव जी की कहानी बताई कि पहले उन्हें भाई लैहणा कहते थे। वे जब गुरु नानकदेव जी की शरण में आए तो गुरु नानक ने उनसे पूछा, ''तेरा क्या नाम है?'' तो उन्होंने कहा, ''लैहणा।'' पंजाबी में किसी से कुछ लेना हो तो उसे लैणा कह देते हैं। उन्होंने कहा, ''हाँ भाई तूने लेना है और हमने देना है।''

जब श्रीचंद और लखमी दास को पता चला कि गुरु नानकदेव जी ने सब कुछ अंगददेव जी को दे दिया है तो श्रीचंद ने कहा कि यह तो हमारे घर का नौकर था, हम तो समझते थे कि इनका कोई पैसे टके का लेन-देन है जो यह कहते हैं कि भाई, तुमने लेना है और हमने देना है।

प्यारेयो, सन्तों की रमज को सन्त जानते हैं या उनका सेवक जानता है, दुनिया को क्या पता है कि सन्त कहां से बोलते हैं। सबसे पहले तो सन्तों के सगे-संबंधी वारिस बनते हैं क्योंकि उनकी नजरें पहले से ही लगी होती हैं कि किसी न किसी तरह हमारा बन जाए लेकिन भजन की तरफ उनका ध्यान नहीं होता। लोग आकर उन्हें माथा टेकते हैं कि ये गुरु के पास रहते हैं तो उनके अंदर अहंकार आ जाता है, अहंकार हमारे ऊपर मैल चढ़ा देता है। गुरु नानकदेव जी ने पहले ही अंगददेव जी को अपने से बिछोड़ दिया कि तू अपने गांव जाकर भजन-अभ्यास कर। गुरु नानकदेव जी ने अंगददेव से कहा कि हमारे बाद तुमने संगत की अगुवाई करनी है।

मैं बताया करता हूँ जिन्होंने कमाई की होती है, वे गुरु को ही विराजमान देखना चाहते हैं। जिन्होंने महाराज सावन सिंह जी का आखिरी वक्त देखा है उन्हें पता है कि जब उनका आखिरी वक्त आया तो महाराज कृपाल कितनी विनतियां करते थे। महाराज सावन ने रजिस्टर मंगवाया कि

सवा लाख आदमियों को नामदान दे दिया है। महाराज सावन ने कृपाल सिंह से कहा, ''कृपाल सिंह, तेरा आधा काम कर दिया है।''

महाराज कृपाल ने प्यार भरे आँसू बहाकर कहा कि बाकी का काम भी आप ही करें, आपका साया सदा ही हमारे सिर पर रहे। आप कमाई वाले महात्मा की तरफ देखें, ''उनके गुरु उन्हें किस तरह मना लेते हैं जो वे इंकार नहीं कर पाते। उन्होंने कहा, ''जो नाच नचवाएंगे वह नाचा जाएगा।''

मैं बताया करता हूँ कि महाराज कृपाल मुझे किस तरह गंगानगर से करणपुर लाए। मैं चाहता था कि हमारे गुरुदेव आराम से कार में पीछे लेटकर जाएं और मैं अपनी गाड़ी में जाऊं। वे कहने लगे कोई खास बात करेंगे, उस समय क्या पता था कि इनकी खास बात क्या है? वे रास्ते में अपने गुरु के आखिरी समय के बारे में सुनाने लगे। मेरा दिल तड़प रहा था कि ये मुझे ऐसी कहानी क्यों सुना रहे हैं। मेरा दिल कर रहा था कि मैं दरवाजा खोलकर कार में से कूद जाऊं।

उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा देख भई, थ्योरी समझाने वाले तो बहुत मिलेंगे लेकिन यह काम तवज्जो और संभाल का है। मैंने अपनी ढेर सारी गरीबी उनके सामने रखी कि आप इतनी ताकत के मालिक इतने पढ़े लिखे हैं फिर भी लोगों ने आपकी विरोधता की, मैं गरीब हूँ मैं क्या करूंगा। वे हँसकर कहने लगे, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे, आपने सच्चाई का होका देना है।''

यही हालत गुरु अंगददेव जी की थी उन्होंने गुरु नानकदेव जी कहा कि आप जो मुझसे उठवाने लगे हैं वह गठरी भारी है। गुरु नानकदेव जी न उन्हें गले से लगाकर उनका नाम ही अंगद रख दिया।

मेरे माता–पिता ने मेरा नाम सरदारा सिंह रखा हुआ था। मैं जब बाबा बिशनदास के चरणों में गया तो उन्होंने कहा सरदारा का कोई महत्व नहीं होता और उन्होंने अपनी पसंद का नाम 'अजायब सिंह' रख दिया। यह

गुरु की मौज होती है। जब लड़की की शादी हो जाती है तो वह ससुराल चली जाती है। अब ससुराल वालों की मर्जी है कि उसे किस नाम से बुलाएं, लड़की विरोध नहीं करती क्योंकि वह उस घर की मेम्बर बन चुकी होती है। शिष्य भी गुरु के घर का नुमाइंदा बन चुका होता है यह गुरु की मौज है उसे जिस नाम से बुलाए, इससे शिष्य को खुशी होती है।

इसी तरह सहजो बाई के गुरु का नाम रणजीता था, आप कहती हैं कि मेरे गुरु का पंथ बहुत सुहेला है। कौन तीर्थों पर लंबे चक्कर लगाए। वहां मंडियां लगती हैं, आजकल तो वहां अनेकों सिनेमा हैं।

सहजो बाई कहती हैं कि हमारा फर्ज बनता है कि अपने जीवन को सफल बनाने के लिए नाम की कमाई करें। सन्तमत में परमात्मा की भक्ति करने के लिए औरत, मर्द का कोई सवाल नहीं है। सेवक और बेटे का सवाल नहीं जो करे वही कामयाब होता है। बेटा करे, बेटी करे या संगत में से जो भी करे सतगुरु उसी के काज सँवारता है।

सतगिुरु दाता सभना वथू का पूरै भाग मिलिावणआि।।

भाग्यशाली ही उस वस्तु को ले सकते हैं, गुरु को मांगने वाले बहुत थोड़े मिलेंगे। कबीर साहब ने कहा थाः

गुरु सबको चाहे, गुरु को चाहे न कोय।

गुरु चाहता है कि मेरे सेवक कामयाब हों। जिन्होंने गुरु को मांग लिया गुरु उनके पास आ जाते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

पवित्र यात्रा

30 जनवरी 1980 — 77 आर. बी. राजस्थान

***एक प्रेमी**–मैं यह जानने का उत्सुक हूँ कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, अभ्यास में कितना समय लगाना चाहिए। मेरे कुछ दोस्त और सतसंगी जो घर पर ही रहते हैं अगर मैं आपकी बताई हुई बातें उन्हें बता दूँ तो क्या इसमें मेरा कुछ नुकसान होगा?*

बाबा जी–आप अपने देश और घर में जितना भी समय भजन–अभ्यास में लगाएंगे वह रूहानियत में आपके लिए फायदेमंद होगा। अभ्यास के साथ–साथ यह जरूरी है कि आप अपने शरीर, मन और विचारों को पवित्र रखें। जहाँ तक दूसरे लोगों को अपने अनुभव बताने के बारे में प्रश्न है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे आपके अनुभव सुनना चाहते हैं या नहीं? यह किसी पर लादने वाली चीज नहीं।

आप इस यात्रा को साधारण यात्रा न समझें, अगर आप इस यात्रा के महत्व को समझें तो आपको लगेगा कि आप पर मालिक की बहुत दया है। उस मालिक ने आपको इस **पवित्र यात्रा** का मौका दिया है। जब आप अपने देश वापिस लौटेंगे और अगर आपके दोस्तों को कुछ जानने की इच्छा होगी तो वे आपसे इस पवित्र यात्रा के बारे में अवश्य पूछेंगे। अगर आपने यहाँ रहकर भजन–अभ्यास करके कुछ कमाया है तभी आप उन्हें इस **पवित्र यात्रा** के बारे में बताकर कुछ नहीं गंवाएंगे लेकिन शर्त यह है कि उनके दिल में कुछ लेने की इच्छा हो।

***एक प्रेमी**–सन्त जी, कुछ दिनों से शाम के समय आप हमसे बातचीत नहीं कर रहे हैं। इस समय में केवल शब्द ही गाए जाते हैं। क्या हम शब्द गाने की बजाए भजन–अभ्यास कर सकते हैं?*

बाबा जी–हर आदमी अलग–अलग तरीका चाहता है। मैं पिछले ग्रुप में शाम को सतसंग ही देता रहा, शब्द नहीं गाए गए। कुछ प्रेमियों ने शिकायत की कि हम शब्द गाना चाहते हैं। जब प्रेमी शब्द गाते हैं तो उन पर 'नाम' की खुमारी चढ़ जाती है और वे उस रस में डूब जाते हैं।

जब महाराज कृपाल देह छोड़कर इस संसार से चले गए थे, उस समय मैंने गुफा में रहने का फैसला किया था। तब राजस्थान के प्रेमियों की प्रार्थना पर ही मैं रात को आठ से नौ बजे (एक घंटे) के लिए गुफा से बाहर आता था। यहाँ के प्रेमी इस एक घंटे में शब्द गाते थे और उनसे बातचीत होती थी। यह समय सिर्फ आप लोगों के लिए नहीं बल्कि यहाँ आने वाले सभी लोगों के लिए है।

आपने देखा होगा कि बहुत से प्रेमी यहाँ आनंद प्राप्ति के लिए आते हैं इसलिए इस एक घंटे के समय की महानता को समझें, आप भी शब्दों का आनंद लें और उनसे लाभ उठाएं।

***एक प्रेमी**–जब कोई शिष्य आपके सामने शब्द गाता है तो क्या आप उस समय उस शिष्य की तरफ ज्यादा ध्यान देते हैं या शिष्य आपकी ज्यादा दया प्राप्त करता है?*

बाबा जी–आप जानते हैं कि जब कोई विद्यार्थी कक्षा में कुछ पढ़कर सुना रहा होता है तो उस समय अध्यापक का सारा ध्यान उस विद्यार्थी की तरफ हो जाता है। इसी तरह आप जिस मालिक की याद में गा रहे हैं, उसे भी आपको कुछ देना पड़ता है क्योंकि आप उस मालिक का काम कर रहे हैं। उस समय मालिक आपकी आत्मा को ऊपर खींचता है जिसका भले ही आप अनुभव न कर पाएं लेकिन उस समय उसे आपके ऊपर दया बरतानी ही पड़ती है। मेरे एक शब्द में आता है:

तेरियां ऐ आत्मां, तूँ सुण अरजोई वे, सुण अरजोई वे।
देवीं काल दे जाल तों छुड़ा, गुरु कृपाल धन वे।
रूहां साडियां नू पार लंघा, गुरु कृपाल धन वे।।

आप मालिक की याद में शब्द गाकर यमों से मुक्त हो सकते हैं। शब्द गाते समय हमारी जुबान भी पवित्र हो जाती है। गुरु नानक जी मालिक की याद में शब्द गाने वालों को 'भजन मंडली' कहकर बयान करते हैं। ऐसा न समझें कि शब्द गाना एक रीति-रिवाज है। जब प्रेमी इकट्ठे होकर मालिक की याद में शब्द गाते हैं तो वे ऐसा महसूस करते हैं जैसे वे अमृत पी रहे हैं, उनके अंदर का जहर निकल जाता है और उनमें शान्ति आ जाती है।

एक प्रेमी–*जब सन्त खुद शब्द गाकर शिष्यों को सुनाते हैं तो इसका क्या महत्व है? क्या आप भी हमें शब्द गाकर सुनाना चाहते हैं?*

बाबा जी–हँसते हुए, मैंने कई बार शब्द गाए हैं और मैंने हुजूर कृपाल के सामने भी कई बार शब्द गाए हैं। हुजूर कृपाल शब्दों को बहुत ध्यान से सुना करते थे, कई बार खुश होकर मेरी तरफ देखकर इशारा करते हुए कहते, ''हाँ, यह ठीक है।''

वह बहुत ही सुहावना समय था जब मैं हुजूर के सामने बैठकर शब्द गाया करता था। हुजूर शब्द के एक-एक लफ्ज को ध्यान से सुनते और खुश होते। मुझे उस समय जो आनंद मिलता था मैं उसे बयान नहीं कर सकता। गुरु की मौजूदगी में जो आनंद होता है हमें उस आनंद को लेने के काबिल होना चाहिए।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''शेरनी का दूध रखने के लिए सोने का बर्तन होना चाहिए, नहीं तो दूध फट जाएगा।'' रोजाना के भजन-अभ्यास से हमारी आत्मा पवित्र होती है और हम परमात्मा के नजदीक हो जाते हैं। अफसोस से कहना पड़ता है कि हम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार में फँसकर अपनी आत्मा को अपवित्र कर रहे हैं।

आप जानते हैं कि साफ कपड़े को रंगना आसान है लेकिन गंदे कपड़े को रंगना बहुत मुश्किल है क्योंकि गंदे कपड़े को साफ करने में बहुत समय लगता है फिर भी उस पर रंग नहीं चढ़ता।

मेरा व्यक्तिगत तजुर्बा है, मैंने कई बार बताया है कि प्रेमी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे सूखे बारूद को आग की तरफ कर देना। सूखा बारूद आग के पास पहुँचते ही भभक उठता है लेकिन हम लोग गीले बारूद हैं, गीले बारूद को सूखने में समय लगता है।

इसी तरह हमारी आत्मा पर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के कई पर्दे चढ़े हुए हैं। भजन–सिमरन करने से ही ये पर्दे उतरेंगे, हमारी आत्मा शुद्ध होगी और हमें 'शब्द–नाम' का अनुभव होने लगेगा। आप अपनी जिंदगी को पवित्र बनाएं फिर देखें, 'नाम' का रंग कैसे चढ़ता है। हम लोग 'नाम' तो ले लेते हैं लेकिन परहेज नहीं करते इसलिए हमारी तरक्की रुक जाती है।

प्यारेयो, आपने अपनी जिंदगी विषय–विकारों में गँवा ली है फिर भी आपको तसल्ली नहीं हुई अगर आप सांसारिक भोग–विलासों में ही लगे रहेंगे तो भोग आपको ही भोग लेंगे। आग में लकड़ियाँ डालने से आग और तेज भड़कती है अगर हम मन की बात मानेंगे तो विषय–विकारों का चक्कर बढ़ता ही जाएगा।

एक प्रेमी–*जिस तरह कपड़े को साफ करके उसमें से सफेदी निकाली जाती है उसी तरह जब हम मन को साफ करना चाहते हैं तब पाप सामने आ जाते हैं। क्या यही पाप गुरु और शिष्य के बीच में दीवार बनकर खड़ा हो जाता है?*

बाबा जी–आप जब भी कोई काम करते हैं तो पहले सोचें कि यह काम अच्छा है या बुरा है। मन में पाप की वजह से आप लोग काम करने से पहले नहीं सोचते फिर सोचते हैं कि मुझसे गलती हो गई है। परमात्मा और आप के बीच में यही रुकावट है। कुएँ में कूदने से पहले सोचना था कि आपको चोट लग सकती है, आपकी टाँग टूट सकती है, आप मर भी सकते हैं, बाद में पछताने का कोई फायदा नहीं। पहले सोचें फिर करें।

मन की यह आदत है कि पहले यह हमें गलत काम करने की सलाह देता है, गलत काम करवाकर कहता है, ''ओह, तूने यह क्या किया?''

कबीर साहब कहते हैं, ''मन हमें जंगल में जाकर भजन–अभ्यास करने की सलाह देता है। जब हम जंगल में पहुँच जाते हैं तो यह मन हमें घर वापिस आने की सलाह देता है, कहता है कि भजन–अभ्यास घर पर रह कर भी किया जा सकता है। यह मन बहुत से बहाने बनाकर हमें जंगल से घर ले आता है।''

जब हम घर वापिस आ जाते हैं तो हमारा मेल–मिलाप दुनियावी लोगों से बढ़ जाता है। वे लोग हमसे कहते हैं कि तुम शादी कर लो। जब हम शादी कर लेते हैं, गृहस्थ में फँस जाते हैं, भजन–अभ्यास छोड़ देते हैं तब यह मन हमें भटकाता है। पहले कहता है कि तू भक्ति कर फिर कहता है कि तू गृहस्थ भोग। मन की बातों में फँसकर ही यह जीव चौरासी लाख योनियों में जन्मता और मरता है।

मेरा एक चचेरा भाई है। जब हम छोटे थे तो हमने कसम ली थी कि हम कभी शादी नहीं करेंगें, परमात्मा की भक्ति करेंगे। कुछ समय अभ्यास करने के बाद वह अपने घर चला गया। थोड़े समय बाद उसकी शादी तय हो गई, उस समय मैं आर्मी में था। मेरे चाचा ने इस डर से मुझे शादी में नहीं बुलाया कि कहीं मैं उसे पुरानी कसमें याद न दिला दूं और वह शादी न करवाए।

जैसे ही मुझे पता चला कि मेरे चचेरे भाई की शादी हो रही है, मैं बिना बुलाए ही वहाँ पहुँच गया। उस समय शादी की रसमें चल रही थी। मैं वहाँ चुपचाप बैठ गया। मेरे चाचा ने मेरा स्वागत नहीं किया बल्कि नाराज होकर कहा, ''तुम यहाँ क्यों आए हो, वापिस चले जाओ?'' कुछ रीति–रिवाजों के बाद जब मेरा चचेरा भाई घोड़ी पर बैठा तो मैंने मौका देखकर उससे पूछा, ''तुम्हारी उन कसमों का क्या हुआ?''

इतना कहकर मैं वहाँ से चुपचाप चल पड़ा ताकि कोई समस्या खड़ी न हो जाए। वह लड़का अच्छी आत्मा थी, उसने महसूस किया कि मैं क्या कर रहा हूँ। वह घोड़ी से उतरकर एक तरफ चल पड़ा। आखिर हम दोनों रेलवे स्टेशन पर मिले। मैं अलग स्टेशन की और वह किसी और स्टेशन की टिकट खरीद रहा था।

कुछ देर बाद परिवार के लोग दूल्हे को ढूंढने लगे। बारात जाने के लिए तैयार थी लेकिन दूल्हा नदारद था। मुझे वहाँ न पाकर चाचा को चिन्ता हो गई कि कहीं मैं उसे भगाकर न ले गया हूँ। कुछ लोगों को इधर–उधर और रेलवे स्टेशन की तरफ भेजा गया।

जब हम पकड़े गए तो खूब मारपीट हुई। मैं बहुत पतला था और ताकतवर लोग मेरे पीछे भाग रहे थे। रेलवे स्टेशन पर खड़े लोग समझ नहीं सके कि क्या हो रहा है। मैंने बताया, ''मैं फौज में अपनी ड्यूटी पर जा रहा हूँ, ये लोग मुझे परेशान कर रहे हैं।'' आखिरकार वे लोग हमें पकड़कर चाचा के घर ले आए और उसकी शादी करवा दी।

उसकी शादी से पहले की बात है जब हम परमात्मा की तलाश में इकट्ठे अभ्यास किया करते थे। गाँव के लोग उस लड़के की इज्जत करते थे। एक दिन उस लड़के ने गाँव में जाकर यह बात फैला दी, ''अब यह संसार नष्ट होने वाला है।'' गाँव के लोगों ने पूछा, ''इससे बचने का कोई तरीका है?'' उसके पास इस बात का कोई उत्तर नहीं था क्योंकि उसे परमात्मा का ज्ञान नहीं था। तब मैंने वहाँ जाकर कहा, ''यह संसार कभी भी पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होता लेकिन इस लड़के की दुनिया नष्ट होने वाली है क्योंकि अब इसके मन ने इसे गाँव वापिस जाकर अपने परिवार के साथ रहने की सलाह दी है। एक दिन इसकी शादी हो जाएगी और यह गृहस्थ में फँस जाएगा। उस समय उसने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया इसलिए मैं वहाँ से चल पड़ा।''

उसकी शादी हुई और उसके घर नौ बेटियों ने जन्म लिया। भारत में लड़कियाँ एक बड़ी समस्या हैं। माता–पिता को लड़की के लिए अच्छा लड़का ढूंढना और लड़की की शादी पर बहुत खर्च करना पड़ता है। अब वह बूढ़ा और अंधा हो गया है, उसे आठ बेटियों को पालना पड़ता है (जिसमें से एक बेटी शादी के बाद मर चुकी है।)

कुछ महीने पहले दिल्ली जाते हुए वह मुझे रायसिंह नगर में मिला। वह देख नहीं सकता था लेकिन उसने मुझे मेरी आवाज से पहचान लिया। मैंने उससे पूछा, ''तुम्हारा क्या हाल है?'' उसने कहा, ''मैं शादी करके पछता रहा हूँ।'' मैंने कहा, ''अब पछताने से क्या फायदा? मैंने तो तुम्हें कसमों की भी याद दिलाई थी लेकिन तुम नहीं माने।''

पहले आपका मन आपको सलाह देता है कि आप सन्त बने, गुरु बनें, परमात्मा की भक्ति करने वाले बनें, यही मन कुछ समय आपसे परमात्मा की भक्ति भी करवाता है फिर यही मन अचानक ऐसी चाल चलता है कि आपको दुनियावी जिंदगी जीने की सलाह देता है और आप धीरे–धीरे सांसारिक कामों में फँस जाते हैं। हमें इस मन से सावधान रहने की जरूरत है।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैं सोचता था कि मेरा मन मरकर भूत बन चुका है लेकिन यह मन एक ऐसा भूत है जो मरने के बाद भी मेरा पीछा कर रहा है।''

मैं जानों मन मर गया, मर के हूआ भूत।
मूए पीछे उठ लगा, ऐसा मेरा पूत।।

✻✻✻

धन्य अजायब

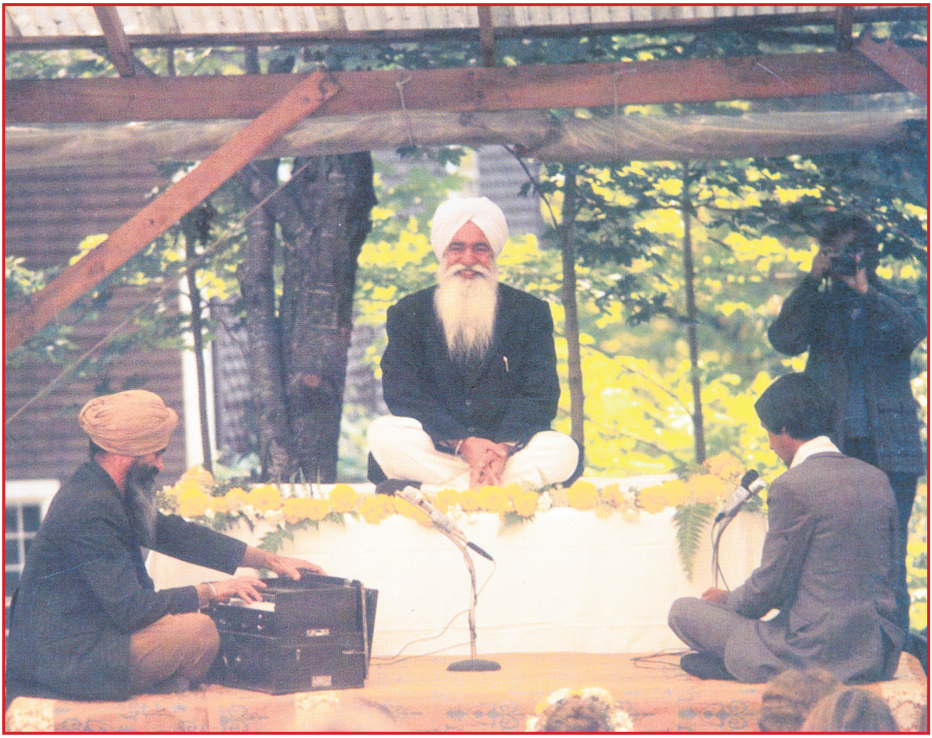

सतसंगों के कार्यक्रम

04 से 06 जुलाई – 2025 अहमदाबाद

01 से 03 अगस्त – 2025 जयपुर

07 से 12 सितम्बर – 2025 16 पी.एस आश्रम (राज.)

RNI No - RAJHIN/2003/9899

सन्त इस संसार का बैकग्रांउड देखते हैं क्योंकि इस संसार में न कोई गरीब सुखी है और न कोई अमीर सुखी है। महात्मा को जिंदगी में एक गरीब से लेकर बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं तक मिलने का मौका मिलता रहता है। जिससे भी पूछते हैं वह फोड़े की तरह भरा हुआ है। आज हम जिसे थोड़ा बहुत सुखी समझते हैं क्या पता है कि कब आफत बन जानी है, कब एक्सीडेंट हो जाना है, कब हार्ट फेल हो जाना है, कब किस बीमारी ने आकर घेर लेना है।